International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 12 Issue 4, July.-August, 2024, Impact Factor: 8.376

''बालिका शिक्षा पर पड़ने वाले सामाजिक अवरोधन का अध्ययन करना''

डॉ. आरती गुप्ता[1], निवेदिता[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर
[2]बी.एड.एम.एड. छात्रा, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

"A Study of Social Barrier on Girl Education"

Dr. Arti Gupta[1], Nivedita[2]

[1]Assistant Professor, Biyani Girls B.Ed. College, Jaipur
[2]B.Ed. M.Ed. Student, Biyani Girls B.Ed. College, Jaipur

सारांश :

शिक्षा वर्तमान शताब्दी की वह सबसे महत्वपूर्ण संस्थागत प्रक्रिया है जो व्यक्ति व समाज को विविध रूपों से प्रभावित करती है। **ब्राउन (1947)** ने कहा कि ''शिक्षा सचेतन रूप से नियंत्रित प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन लाये जाते हैं और व्यक्ति द्वारा समूह में परिवर्तन लाये जाते है। इस प्रकार शिक्षा, व्यक्ति और समाज में गहरा सम्बन्ध है। शिक्षा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य जीना सीखते है, पर्यावरण से समायोजित करता हुआ अपने अनुभवों के भण्डार में वृद्धि करता है, उनको संगठित करता है तथा अगली पीढ़ी को हस्तान्तरित करता है।'' **गिस्बर्ट (1973)** ने भी शिक्षा को भावी जीवन से समायोजित का एक आदर्श माना है। उनके शब्दों में, ''शिक्षा का अर्थ उसे ग्रहण करने वाले में उन आदतों व दृष्टिकोण का विकास करना है जिसके द्वारा वह भविष्य का सफलतापूर्वक सामना कर सके।'' इनमें शिक्षा ग्रहण करने वाले के द्वारा उसके समाज में प्रचलित मूल्यों के अनुकूल ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त करना भी सम्मिलित है।'' इस प्रकार समाज द्वारा निर्धारित मूल्यों की प्राप्ति हेतु भी शिक्षा एक साधन के रूप में कार्य करती है। शिक्षा के औपचारिक एवं अनौपचारिक, सभी प्रकार के अभिकरण बच्चों में समाज सामाजिक, नैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक आदि समस्त प्रकार के मूल्यों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

की वर्ड :–माध्यमिक अवस्था, बालिका शिक्षा, आर्य वर्ग, जाति वर्ग, सामाजिक अवरोधन

प्रस्तावना–

रूप शिक्षा एवं विशेष रूप से उच्च शिक्षा में महिलाओं का अनुपात प्रदर्शित करते है कि महिलाएँ शिक्षा से वंचित रहती है। पारम्परिक रूप से भारतीय समाज में महिलाओं के लिए औपचारिक शिक्षा को कभी अधिक महत्व नहीं दिया गया। इस संदर्भ में महिलाओं में शिक्षा के अवसरों को अवरूद्ध करने के लिए अन्य तत्व उत्तरदायी है। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा 1981 में कराये गए एक अध्ययन में पाया गया कि 77.8 प्रतिशत अभिभावक अपनी लड़कियों के लिए किसी भी प्रकार की शिक्षा के पक्ष में नहीं थे। अतः अध्ययन के दौरान पाया गया कि महिलायें ग्रामीण क्षेत्र में शहरी क्षेत्रों के अनुपात में अधिक स्कूल छोड़ती है। महिलायें शिक्षा के पिछड़ेपन का कारण माताओं में सीमित शिक्षा तक का पहुँच होना पाया जाता है। इसके अतिरिक्त शिक्षिकाओं का अभाव, असंबद्ध पाठ्यक्रम तथा गृहणियों के कार्य, आवश्यकताओं व विद्यालय के समय में तालमेल का अभाव भी महिलाओं का शिक्षा में कमी के कारण है।

वास्तव में लिंग के आधार पर शैक्षिक अवसरों की असमानता तब तक महत्वहीन मुद्दा बना रहेगा जब तक कि महिलाओं के लिए शिक्षा की प्रांसगिकता के प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर नहीं दिया जाता। महिला शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण सामाजिक, आर्थिक आयाम है अभिभावकों का व्यवसाय, जो कि उच्च शिक्षा में महिलाओं का दाखिले को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक प्रतीत होता है। **अहमद (1974)** ने अपने अध्ययन में पाया कि महिला विद्यार्थियों में अधिकांश छात्राएँ वरिष्ठ प्रशासनिक और प्रबंधकीय कर्मचारियों, वरिष्ठ पेशेवर तथा उद्योगपतियों के परिवारों से थी।

शिक्षा मानव उन्नति की कुँजी होने के साथ–साथ लैंगिक असमानता को कम करने का रास्ता भी है। वैश्वीकरण ने स्त्री और पुरुषों के मध्य साक्षरता अन्तर और स्कूल नामांकन विभेद को कम करने में योगदान दिया है। वैश्वीकरण ने महिला शिक्षा को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में प्रभावित किया है। सकारात्मक विकास में पारम्परिक–सांस्कृतिक विश्वासों जैसे कि महिला की शिक्षा महत्वपूर्ण नहीं है कि दृढ़ता में गिरावट आयी है यद्यपि ऐसा दृष्टिकोण आज भी है लेकिन भूमण्डलीकरण के कारण इसकी शक्ति में कमी आयी है और महिलाओं की शिक्षा ज्यादा संभव हो सकी है।

समस्या का औचित्य –

सभी कार्य के लिए समस्या का चयन करना महत्वपूर्ण स्थान है। बालिका शिक्षा का पिछड़ापन भारतीय पुरुष प्रधान समाज की देन है। भारतीय समाज में आज भी बालकों को बालिकाओं की अपेक्षा अधिक महत्व दिया जाता है। बालकों की शिक्षा को बालिकाओं की शिक्षा से अधिक महत्व दिया जाता है।

इसी प्रकार माध्यमिक शाला स्तर पर बालकों की 54ण्4ः तथा बालिकाओं की शाला त्यागने की दर 60ण्9ः थी। बालिकाओं की अधिक संख्या में शाला छोड़ देने से शिक्षा में समानता का लक्ष्य कम हो रहा है। भारतीय समाज में विभिन्नताएँ हैं और इन विभिन्नताओं के आधार पर बालिकाओं का विद्यालय ड्रॉप–आउट दर निम्न प्रकार है –

संवर्ग	कक्षा 1–5	कक्षा 1–8	कक्षा 1–10
सामान्य	28ण्57ः	52ण्92ः	64ण्82ः
अनुसूचित जाति	34ण्20ः	57ण्30ः	71ण्30ः
अनुसूचित जनजाति	42ः	67ण्10ः	77ण्80ः

शोधकत्री ने देखा कि उच्च शिक्षा तक जाते–जाते बालिकाओं का विद्यालय ड्रॉप–आउट दर बढ़ जाता है किन्तु निम्न जाति वर्ग की बालिकाओं में यह ड्रॉप–आउट दर अधिक पाया गया।

सम्बन्धित साहित्य :–

1. **नायर, उषा (2011)–ने भारत की ग्रामीण महिलाओं की उच्च शिक्षा का अध्ययन** किया है जिसके उद्देश्य निम्नलिखित है लड़कियों की शिक्षा व्यवस्था, नामांकन, ठहराव तथा पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन का लैंगिक समानता की दृष्टि से अध्ययन करना। निष्कर्ष शैक्षिक विकास योजनाकारों के समक्ष एक मूल्य चुनौति पर्याप्त संसाधनों की योजना है जिससे उच्च शिक्षण के लिए सार्वभौमिक व्यवस्था की जा सके।

2. **मिश्रा ए. (2011)–ने भारत में महिला शिक्षा के मूल एवं उद्भव का अध्ययन** किया है, जिसके उद्देश्य निम्नलिखित है भारत में वर्तमान उच्च शिक्षा के संदर्भ में महिला शिक्षा की दिशा में दिए गए स्वतंत्रता के बाद किए गए प्रयासों का अध्ययन करना। निष्कर्ष 1955 से 1975 तक महिला शिक्षकों की संख्या में वृद्धि हुई, परन्तु वृद्धि का प्रतिशत ऊँचा नहीं हुआ था।

3. **उपेन्द्रनाथ स्त्री (2012)–ने स्त्री शिक्षा की वर्तमान दशा का अध्ययन किया।** जिसके उद्देश्य निम्नलिखित है महिला शिक्षा के लिए समेकित नीतियों को विकसित करने के लिए किए गए प्रयासों का अध्ययन करना। निष्कर्ष इसमें यह पाया गया कि इसका पहला भाग्य स्त्री शिक्षा पर विशेष जोर डाला तथा शैक्षिक उन्नति की व्यापक रूपरेखा का वर्णन करता है तथा दूसरा भाग्य गतिविधियों के प्राथमिक क्षेत्रों का वर्णन करता है।

4. **लक्ष्मी, एल. भाग्य (2012)–ने ग्रामीण अभिभावकों का महिला उच्च शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया। जिसके उद्देश्य निम्नलिखित है** ग्रामीण महिला व ग्रामीण पुरुषों को दोनों का पारम्परिक तरीके से तुलनात्मक अध्ययन करना।अभिभावकों का शिक्षा के प्रति अधिक जागरुकता का अध्ययन करना। निष्कर्ष शैक्षिक संस्थान महिला उच्च शिक्षा को अधिक से अधिक शिक्षा के प्रति आकर्षित करना था और महिलाओं को सुविधानुसार पाठ्यक्रम का निर्माण करना।

5. **जैन गणेश लाल (2013)–ने राजस्थान के ग्रामीण और शहरी किशोरियों की आकांक्षा और व्यक्तित्व लक्षण से मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया, जिसके उद्देश्य निम्नलिखित है** शहरी और ग्रामीण किशोरियों का सरकारी नौकरी के प्रति प्रयासरत रहना।ग्रामीण और शहरी दोनों किशोरियों का उनके व्यक्तित्व अध्ययन करना।

साहित्य विवेचना :–
प्रस्तुत शोध में बालिका शिक्षा पर पड़ने वाले सामाजिक अवरोधन का अध्ययनकरना है। इससे सम्बन्धित अध्ययन निम्न है –नायर, उषा (2011), मिश्रा ए. (2011), उपेन्द्रनाथ स्त्री (2012), लक्ष्मी, एल. भाग्य (2012), जैन गणेश लाल (2013)अतः उपरोक्त शोध अध्ययनों में बालिका शिक्षा के अवरोधनो हेतु अनके शोध अध्ययन किये गये है। परन्तु बालिका शिक्षा पर पड़ने वाले सामाजिक अवरोधन के प्रति सन्तोषजनक परिणाम उपलब्ध नहीं है इसलिए बालिका शिक्षा पर पड़ने वाले सामाजिक अवरोधन का अध्ययननामक शीर्षक रूप में समस्या का चयन किया गया है।

समस्या कथन –
‘‘बालिका शिक्षा पर पड़ने वाले सामाजिक अवरोधन का अध्ययन करना‘‘

शोध के उद्देश्य –
(1) उच्च आय वर्ग की बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली सामाजिक बाधाओं का अध्ययन करना।

(2) निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की शिक्षा में आने वाले सामाजिक अवरोधन का अध्ययन करना।

अध्ययन में प्रयुक्त परिकल्पनाएँ –
(1) उच्च और निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की शिक्षा में आने वाले सामाजिक अवरोधन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(2) सामान्य जाति वर्ग एवं निम्न जाति वर्ग की बालिकाओं की शिक्षा में आने वाले सामाजिक अवरोधन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श–
प्रस्तुत शोध कार्य में अनुसंधान हेतु आय वर्ग एवं जाति वर्ग की बालिकाओं की शिक्षा को यादृच्छिक विधि द्वारा 200 बालिकाओं का चयन किया गया है।

शोध विधि –
प्रस्तुत शोध कार्य हेतु अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी –
प्रस्तुत अध्ययन में सांख्यिकी के रूप मेंमध्यमान, प्रमाणिक विचलन, टी–परीक्षण एवं प्रसरण गुणांक का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना– माध्यमिक स्तर पर उच्च आय वर्ग एवं निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की शिक्षा में आने वाले सामाजिक अवरोधन में सार्थक अन्तर नही है।

क्र. सं.	समूह	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता का स्तर 0.05 पर
1	माध्यमिक स्तर पर निम्न आय वर्ग की बालिका	25	20.08	1.87	0.5	स्वीकृत
2	माध्यमिक स्तर पर उच्च आय वर्ग की बालिका	25	19.8	1.81		

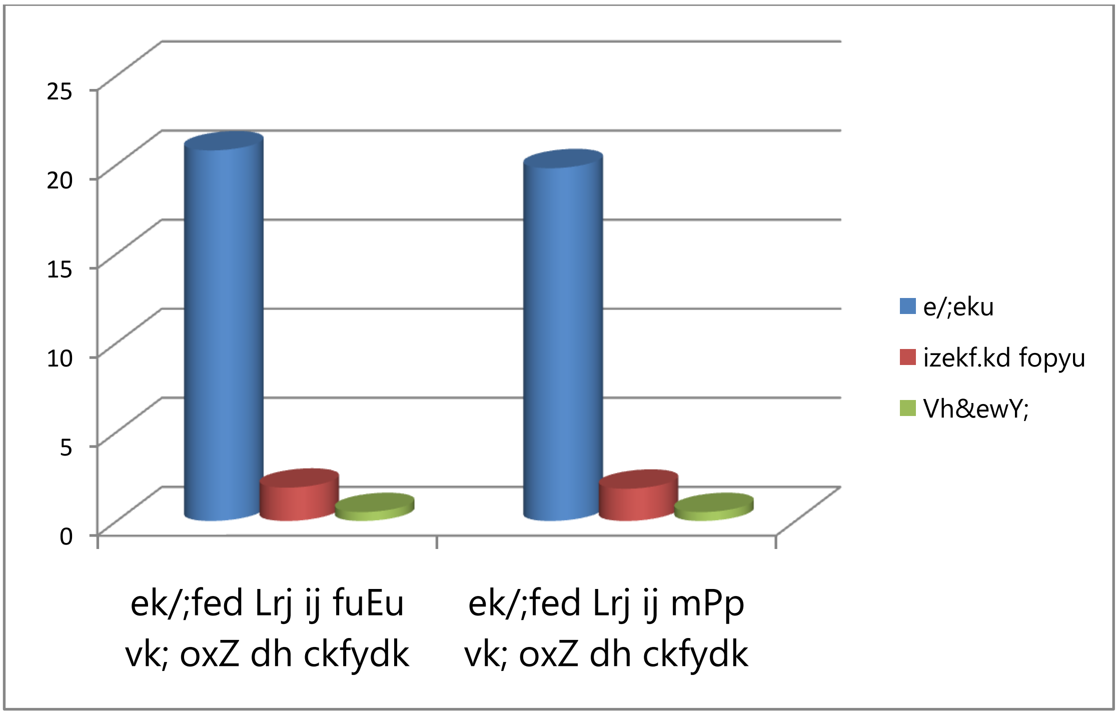

परिणामः–
माध्यमिक स्तर पर निम्न आय वर्ग व उच्च आय वर्ग की बालिकाओं की शिक्षा में आने वाले सामाजिक अवरोधन से संबंधित आंकड़ों को प्रदर्शित करती है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि निम्न आय वर्ग एवं उच्च आय वर्ग की बालिकाओं से सम्बन्धित प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 20.08 एवं 19.8 प्राप्त हुए जबकि प्रमाणिक विचलन का मान क्रमशः 1.87 एवं 1.81 प्राप्त हुए है दोनो समूहों के मध्मान व प्रमाणिक विचलन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर टी अनुपात 0.5 प्राप्त हुआ है। कि त्र 48 व सार्थकता स्तर पर सारणी टी–मूल्य 2.00 है। गणना से प्राप्त मान 0.5 सारणी से प्राप्त मान 2.00 से कम है। अतः शोध कार्य हेतु रचित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि माध्यमिक स्तर पर निम्न आय वर्ग एवं उच्च आय वर्ग की बालिकाओं की शिक्षा में आने वाले सामाजिक अवरोधन में सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध के निष्कर्षो के आधार पर शिक्षकों को बालिकाओं को सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की चलायी जाने वाली योजनाओं का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित कर सकेंगे। शिक्षकों को भी सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की बालिकाओं के लिए चलायी जाने वाली योजनाओं के प्रति जागरूक रहना चाहिए जिससे विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं को योजना के लाभ के लिए जागरूक कर सकेंगे। बालक सामाजिक प्राणी है तथा सबसे अधिक समय बालकों का अपने अभिभावकों के साथ व्यतीत होता है। इसलिए अभिभावकों को सरकार द्वारा बालिकाओं के लिए चलायी जाने वाली योजनाओं के लाभ के लिए निम्न प्रकार से प्रोत्साहित कर सकेंगे। अभिभावकों को सरकार द्वारा चलायी जाने वाली योजनाओं के प्रति सदैव जागरुक कर सकेंगे। अभिभावकों को बालिका शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित व जागरूक किया जाना चाहिए जिससे वह सदैव बालिकाओं को शिक्षा हेतु प्रेरित करें तथा शिक्षा के प्रति सकारात्मक रवैया अपनाएँ। लोग विद्यालयों की गुणवत्ता की जाँच न होने से निराश है इसलिए बालिका विद्यालयों में समय–समय पर गुणवत्ता की जाँच की जाये। बालिका को अपनी शिक्षा की महत्ता के विषय में उपयुक्त जानकारी होगी। बालिकाएँ सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की योजनाओं के प्रति जागरूक रहेंगी। बालिकाओं का शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- **नायर, उषा** (2011)–भारत की ग्रामीण महिलाओं की उच्च शिक्षा का अध्ययन
- **मिश्रा ए.** (2011)–भारत में महिला शिक्षा के मूल एवं उद्भव का अध्ययन।
- **उपेन्द्रनाथ स्त्री** (2012)–स्त्री शिक्षा की वर्तमान दशा का अध्ययन।

- **लक्ष्मी, एल. भाग्य** (2012)–ग्रामीण अभिभावकों का महिला उच्च शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।
- **जैन गणेश लाल** (2013)–राजस्थान के ग्रामीण और शहरी किशोरियों की आकांक्षा और व्यक्तित्व लक्षण से मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।
- **अवस्थी, सूर्य किरण** (2015) –भोपाल के अल्पसंख्यक मुस्लिम महिलाओं के लिए शैक्षिक अवसरों की समानता व उनके उपयोग का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

Websites

[1]. http://zeenews.india.com
[2]. Time of India (E-paper)
[3]. The Hindu Business Line (E-paper)
[4]. www.nsdaindia.gov.in
[5]. www.government.india.in
[6]. www.wikipedia.com
[7]. www.shodgangotri.com